लेवें। सिरिंज की सुई को आगे से मोड़ कर सिरिंज को छायादार समतल स्थान पर आधे घंटे तक बिना हिलाए-डुलाए छोड़ दे ताकि रक्त जम जाए और सीरम अलग हो जाए। अब इस सिरिंज को सावधानी पूर्वक प्रयोगशाला पहुंचा दें।

(4) त्वचाः त्वचा के रोगों के लिए प्रभावित चमड़ी को कुंद ब्लेड या चाकू की मदद से तब तक खुरचें जब तक की हल्का खून न रिसने लगे। खुरचने से पहले ब्लेड/चाकू पर तेल या वैसलीन लगा ले ताकि खुरचन ब्लेड/चाकू के साथ चिपक जाए। अब इस खुरचन को साफ शीशी में भरकर डाट लगा दें और प्रयोगशाला पहुंचा दें।

(5) दूधः दूध की सही प्रकार से जांच करवाने के लिए दूध का सैम्पल ठीक प्रकार से लेना बहुत जरुरी है। इसके लिए बाजार से चार नई डिस्पोजेबल सिरिंज द्धहर थन के लिए एकऋ खरीद लाएं। फिर साफ पानी में लाल दवाई मिलाकर पानी को हल्का गुलाबी बना लें तथा इस पानी से थनों को अच्छी तरह से धो लें और सुखने दें। अब एक डिस्पोजेबल सिरिंज लेकर उसकी सुई को मोड़ दें तथा पीछे से पिस्टन खींच कर बाहर निकाल लें। पिस्टन को पकड़ने की जगह के अलावा किसी और भाग को न छुएं। अब थन से एक धार किसी अन्य बर्तन में निकाल दें तथा दूसरी धार सीधे सिरिंज में मारें। इसके बाद पिस्टन को वापिस सिरिंज पर लगा कर थोड़ा दबा दें। सिरिंज के बाहर लगे दूध को सूखे कपड़े से पौंछ दें तथा सिरिंज पर टेप लगाकर अपना नाम व थन की पहचान लिख दें। इसी प्रकार शेष थनों से भी नमूना एकत्र कर लें। कोशिश करें कि पहले जो थन ठीक लग रहा है उससे दूध का नमूना एकत्र करें तथा अंत में खराब थन से नमूना लें। अब इन नमूनों को किसी गते के डिब्बे आदि में डालकर धूल, मिट्टी व धूप से बचा कर प्रयोगशाला पंहुचा दें।

प्रयोगशाला परीक्षण पशुओं का ईलाज करने में पशुचिकित्सक के लिए बहुत सहायक होते हैं। इन परीक्षणों की मदद से सही उपचार मिलने पर पशु जल्दी स्वस्थ होता है तथा पशु के इलाज पर होने वाला खर्च भी कम आता है। जिला रोग निदान प्रायोगशालाओं में ये परीक्षण बिल्कुल मुत किए जाते हैं। पशुपालक भाई विभाग द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही इन सुविधाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

मुख्य सम्पादक :

डॉ॰ एल॰ सी॰ रंगा, पी॰ एच॰ डी॰
महानिदेशक

सम्पादक :

डॉ॰ सुखदेव राठी, उपनिदेशक
डॉ॰ नरेन्द्र ठकराल, पशु चिकित्सक

पशुपालन से सम्बंधित अन्य पुस्तकें Download करने के लिए QR Code Scan करें

पशुपालन एवं डेयरी विभाग, हरियाणा

पशुओं में प्रयोगशाला जांच का महत्व

पशुपालन एवं डेयरी विभाग, हरियाणा

बेज नं. 9-12, सैक्टर -2, पंचकुला, हरियाणा
फोन : 0172-2574663-64
ईमेल : dg.ahd@nic.in

चिकित्सा जगत में ऐसा माना जाता है कि यदि बीमारी के मूल कारण का सही-सही पता चल जाये तो समझिए कि बीमारी का आधा इलाज हो गया। क्योंकि मनुष्य हो या पशु रोगी का सही उपचार तभी संभव है जब उसकी बीमारी के मूल कारण का ठीक से पता हो।

एक अनुभवी चिकित्सक अपने हुनर द्वारा रोग की प्रकृति व लक्षणों के आधार पर बीमारी की पहचान करता है। लेकिन हर मामले में केवल अनुभव और लक्षणों के आधार पर बीमारी का सही-सही पता लगाना संभव नही होता। ऐसे में प्रयोगशाला परीक्षण बीमारी की पहचान द्धनिदानऋ करने में बहुत सहायक सि) होते हैं। पशु चिकित्सा के क्षेत्र में, जहां बीमार पशु बोल-बतला कर अपनी पीड़ा नहीं सुना सकता, वहां प्रयोगशाला जांच का महत्व और भी बढ़ जाता है।

पशु रोग निदान प्रयोगशालाएं :

पशु रोग निदान प्रयोगशालाएं पशुओं के खून, पेशाब, गोबर, दूध व त्वचा आदि के नमूनों की जांच करके रोग की सही-सही पहचान करने में चिकित्सक की सहायता करती है। इसके अलावा पशु की बीमारी के इलाज के लिए कारगर दवाईयों के चुनाव में भी प्रयोगशाला जांच बहुत सहायक सिद्ध होती है। रोग निदान प्रयोगशालाओं के महत्व को समझते हुए हरियाणा सरकार के पशुपालन एवं डेयरी विभाग ने प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर रोग निदान प्रयोगशालाएं खोल रखी है। ये प्रयोगशालाएं पशुधन स्वास्थ्य एवं संवर्धन के क्षेत्र में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सेवाएं दे रही हैं:

- पशुओं के खून, मूत्र, गोबर त्वचा व दूध आदि के नमूनों की जांच करके बिमारियों का पता लगाना।
- बीमारी के उपचार के लिए कारगर दवाईयों का पता लगाना।
- पशुओं में विद्यमान रोगों एवं उनके फैलाव आदि के बारे सूचनाएं एकत्रित करना।
- पशु टीकाकरण कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन करना जैसे मुंहखुर रोग नियंत्रण कार्यक्रम।
- रोगों से बचाव एवं उनके नियन्त्रण के लिए पशुपालकों को जागरुक करना।

नमूने एकत्र करने की विधियां :

किसी भी प्रयोगशाला जांच से सही परिणाम प्राप्त करने के लिए यह जरुरी है कि नमूनों की विधिपूर्वक एकत्रित किया जाए व उन्हें ठीक प्रकार से प्रयोगशाला पहुचाया जाए। जानकरी के अभाव में पशुपालक भाईयों को सही प्रकार से नमूना एकत्र करने में कठिनाई आती हैं। पशुपालकों की इस समस्या को समझते हुए विभिन्न प्रकार के नमूनों को एकत्र करने की सरल विधियां नीचे दी गई है:

(1) गोबर: एक चौडे मुंह की प्लास्टिक की डिब्बी को अच्छी तरह धो कर सुखा लें। इस डिब्बी में लगभग 20 ग्राम ताजा गोबर भर लें और ढक्कन कसकर बंद कर दें। इस डिब्बी को जितना जल्दी हो सके प्रयोगशाला पहुंचा दें। यदि प्लास्टिक की डिब्बी उपलब्ध न हो तो साफ पोलीथिन की थैली का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

(2) मूत्र: लगभग 100 मिलीलीटर की चोड़े मुंह की कोई भी प्लास्टिक या कांच की शीशी अच्छी तरह से धो कर सुखा लें। जब पशु पेशाब करें तो सीधे शीशी में भर लें। शीशी का ढ़क्कन कसकर बंद करके जल्द से जल्द प्रयोगशाला पहुंचा दें।

(3) खून: खून का नमूना किसी प्रशिक्षित पशुधन सहायक या पशु-चिकित्सक की मदद से ही एकत्र करें। खून का नमूना दो अलग-अलग विधियों से एकत्र किया जाता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि इस नमूने के कौन-कौन से परीक्षण किए जाने है।

(i) रक्त परजीवियों की जांच, रक्त कणिकाओं का परीक्षण व रक्त अल्पता आदि की जांच के लिए खून तरल अवस्था में प्रयोगशाला पहुंचाना जरुरी है। खून में ऐसे प्राकृतिक तत्व मौजूद होते हैं जिनसे खून मात्र एक से तीन मिनट में जम जाता है। इसे जमने से बचाने के लिए आम तौर पर ई0 डी0 टी0 ए0 का इस्तेमाल किया जाता है। उपरोक्त परीक्षणों के लिए कांच की एक 10 मिलीलीटर की शीशी को साफ पानी से अच्छी तरह धो कर सुखा लें। अब इसमें लगभग पांच मिलीग्राम द्धराई के दो-तीन दानों के बराबरऋ ई0 डी0 टी0 ए0 पाउडर डाल दें। अब नई सुई से पशु की नस बींध कर लगभग पांच मिलीलीटर खून सीधा शीशी में एकत्र कर लें। शीशी को तुरंत डाट लगाकर दोनों हथेलियों के बीच लगभग दो मिनट तक गोल घुमा कर खून व पाउडर को अच्छी तरह से मिला लें। शीशी को जितना जल्दी हो सके प्रयोगशाला पहुंचा दे। शीशी को सीधी धूप या तेज गर्मी से बचाएं।

(ii) कुछ अन्य परीक्षणों जैसे ब्रूसोलीसिस आदि की जांच के लिए रक्त को बिना रसायन मिलाए एकत्र किया जाता है जिससे खून कुछ देर बाद जम जाता है और एक हल्के पीले रंग का पारदर्शी तरल अलग हो जाता है। जिसे सीरम कहते हैं। इसके लिए 10 मिलीलीटर की नई डिस्पोजेबल सिरिंज में लगभग पांच मिलीलीटर खून खींच कर शेष भाग हवा से भर